Topic 14. भ्वादिगण लुङ् लकार

लुङ् ।

भूतार्थे धातोर्लुङ् स्यात् ।

भूतकाल में धातु से 'लुङ्' लकार होता है। यहाँ किसी विशेष शर्त का उल्लेख न होने से 'भूत' सामान्य भूतकाल का द्योतक है। तात्पर्य यह है कि सामान्यभूत की विवक्षा में धातु से 'लुङ्' लकार होता है।

माङि लुङ् ।

सर्वलकारापवादः ।

'माङ्' उपपद रहते धातु से लुङ् लकार होता है। यह सब लकारों का अपवाद है।

माङ् के समान ही अन्य निषेधार्थक 'मा' अव्यय पद है। प्रयोग में दोनों का एक ही रूप होता है, किन्तु 'मा' अव्यय प्रयोग होने पर लुङ् लकार नहीं होता, जैसे – मा वद, मा वदेत् वा। दोनों का अन्तर इस प्रकार जाना जा सकता है – जहाँ 'मा' शब्द के साथ लुङ् लकार का प्रयोग हो, वहाँ समझना चाहिए कि यह 'माङ्' है, अन्यथा 'मा' होगा।

स्मोत्तरे लङ् च ।

स्मोत्तरे माङि लङ् स्यात्, चात् लुङ् ।

स्मोत्तर माङ् उपपद रहते धातु से लुङ् होता और लङ् भी होता है। इस अवस्था में दोनों लकारों का प्रयोग हो सकता है। उदाहरण के लिए (मास्म भवत् भूत्' या' में 'स्म' परक माङ् उपपद होने से लुङ् और लङ् - दोनों ही लकारों का प्रयोग किया जा सकता है

च्लि लुङि।

२।१।२४ पपाद:।

लुङ् परे होने पर धातु से 'च्लि' होता है। यह च्लि - विधि शप्, श्यन् और श आदि विकरणों की बाधक है। उदाहरण के लिए लुङ् में 'भू' धातु से प्रथम एकवचन में 'भू+ति' रूप बनता है। यहाँ इकार-लोप और अट् आगम होकर 'अभूत' रूप बनता है। इस, 'ति' के सार्वधातुक तिङ् 'तिप्' परे होने से शप्, प्राप्त होता था, किन्तु प्रकृत सूत्र से उसका निषेध होजाता है तब 'च्लि' आदेश होकर 'अभू च्लि त' रूप बनता है

का प्रकृत सूत्र के लोप होकर 'अभूत' रूप बनता है।

च्ले: सिच्।

इत्यादिनो।

गाति-स्था-घु-पा-भूभ्य: सिच: परस्मैपदेषु। एभ्य: सिचो लुक् स्यात्। 'गा-पौ' ग्रह। इणादेश- पिबती' ग्राह्यौ से

P.T.O.

गा, स्था, दा और धा, पा तथा भू धातुओं से परे सिच् का लुक् (लोप) होता है। उदाहरण के लिए अभू स त' में 'भू' धातु से परे सिच् को ...

भूसुवोस्तिङि ।

'भू' 'सु' एतयोः सार्वधातुके तिङि परे गुणो न । अभूत्, अभूताम्, अभूवन् ।
'अभूः, अभूतम्, अभूत । अभूवम्, अभूव, अभूम ।

सार्वधातुक तिङ् परे होने पर 'भू' और 'सू' धातुओं के स्थान पर गुण नहीं होता है । उदाहरण के लिए 'अभूत्' में सार्वधातुक 'त्' परे होने पर सार्वधातुक से गुण प्राप्त होता है, किन्तु 'भू' धातु से सार्वधातुक तिङ् परे होने के कारण उसका निषेध हो जाता है । तब 'अभूत्' रूप सिद्ध होता है ।

Topic -14

न माङ्योगे ।

अडाटौ न स्तः । मा भवान् भूत् । मा स्म भवत्, मास्म भूत् ।

'माङ्' के योग में अट् और आट् नहीं होते । उदाहरण के लिए 'मा भवान् भूत्' में माङ् का योग होने से लुङ् के प्रथम एकवचन 'भूत्' में अट् का आगम नहीं होता है । अतः 'अभूत' न होकर 'भूत' रूप ही रहता है ।